

में रखकर भक्ति भाव से अर्पित करना 3. अंजलि में रखकर किया गया किसी वस्तु का भक्तिपूर्वक अर्पण।

सेवा स्त्री. (तत्.) किसी पूज्य या पूजनीय को सुख-पहुँचाने वाली क्रिया या कार्य, परिचर्या, दलह, खिदमत 2. पूजा, आराधना 3. नौकरी, चाकरी 4. सेवक होने की स्थिति-अवस्था, भाव 5. किसी की भलाई या उन्नति के लिए किया जाने वाला कार्य जैसे- राष्ट्र-सेवा, साहित्य-सेवा आदि 6. उपयोग, उपभोग, व्यसन, आसाक्ति 7. रक्षण 8. चाटुकारिता 9. रोगी की सेवा, शुश्रूषा 10. आश्रय, शरण 11. भक्ति, देवी की उपासना।

सेवा काल पुं. (तत्.) 1. सेवा की अवधि 2. सेवा में रहने की कुल वर्षों (माह तथा दिन भी) की अवधि 3. नौकरी में सेवा-निवृत्ति तक की अवधि या समय, सेवा काल 4. सेवा में नियुक्त या संलग्न रहने की कुल अवधि उदा. मेरा आज बीस वर्ष का पूरा-सेवा काल हो गया।

सेवागम्य वि. (तत्.) 1. जिसे सेवा से प्राप्त किया जा सकता हो, सेवा सुलभ 2. सेवा करके अपने अनुकूल किए जाने योग्य 3. भक्ति भाव से अनुकूल बन सकने के लायक, भक्ति गम्य 4. मात्र सेवा से ही प्राप्त किए जाने की स्थिति में है जो, सेवागम्य।

सेवाजन पुं. (तत्.) 1. सेवक, नौकर 2. सेवा कार्य करने वाला व्यक्ति।

सेवा-टहल स्त्री. (तद्.) 1. शुश्रूषा, सेवा 2. खिदमत 3. परिचर्या 4. किसी प्रकार का सेवा कार्य।

सेवाती स्त्री. (देश.) स्वाति अश्विनी आदि विविध सत्ताईस नक्षत्रों में से पंद्रहवाँ नक्षत्र जिसे शुभ नक्षत्र माना जाता है, चातक पक्षी इसी नक्षत्र में होने वाली वर्षा की बूँदों को पीकर अपनी प्यास बुझाता है, स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूँदे यदि सीप के खुले मुँह (संपुट) में पहुँच जाती है तो 'मोती' बन जाती हैं, केले में पड़कर 'कपूर', सर्प के मुख में पड़कर विष तथा बाँस के पौधे में पड़कर 'वंशलोचन' बन जाती है।

सेवादार पुं. (तत्.+फा.) 1. वह सिख भक्त जो किसी सिख गुरु की परम निष्ठा तथा भक्ति

भाव से सेवा करता था (है), आजकल वह जो गुरुद्वारे में किसी प्रकार की निष्ठापूर्वक सेवा, या सेवा कार्य करता है; 'सेवादार' 2. सेवा करने वाला व्यक्ति, सेवक वि. सेवा करने वाला, 'सेवादार' 2. सेवक 3. चाकर, नौकर।

सेवादास पुं. (तत्.) 1. सेवा करने वाला व्यक्ति 2. आनुषंगिक रूप से छोटी-मोटी सेवा करने वाला व्यक्ति, नौकर, सेवक। परिचारक।

सेवादासी स्त्री. (तत्.) छोटी-मोटी सेवा करने वाली स्त्री, सेविका, परिचारिका।

सेवादर्म पुं. (तत्.) 1. सेवा करने का कार्य, कर्तव्य 2. सेवक का कर्तव्य, धर्म 3. सेवा को धर्म मानकर करने की क्रिया या कर्तव्य।

सेवाधारी पुं. (तद्.) 1. सिख सेवक, सेवादार 2. गुरुद्वारे में जाकर गुरु ग्रंथ साहब तथा गुरुद्वारे में आने वाले भक्तों की सेवा शुश्रूषा करने वाला व्यक्ति 3. गुरुद्वारे में भक्तिभाव से निष्ठापूर्वक विविध प्रकार के सेवा-कार्य करने वाला व्यक्ति, स्वेच्छा से सेवा कार्यकर्त्ता।

सेवा-निवृत्त वि. (तत्.) किसी गैर सरकारी या सरकारी सेवा (नौकरी) से सेवा-अवधि पूरी करके या समाप्त होने के कारण अवकाश-प्राप्त व्यक्ति।

सेवा-निवृत्ति स्त्री. (तत्.) 1. सेवा-निवृत्त होने की अवस्था, भाव 2. सेवा की अवधि समाप्त होने पर सेवा की समाप्ति।

सेवा पंजी स्त्री. (तत्.) सेवा संबंधी मुख्य बातें या घटनाएँ लिखने की पुस्तिका, सेवा-पुस्तिका, नौकरी का अभिलेख service book

सेवा पद्धति स्त्री. (तत्.) सेवा करने की रीति, सेवा करने का विधि-विधान या नियम, वैष्णव संप्रदायों में देवताओं आदि की सेवा-पूजा की विशिष्ट प्रणाली।

सेवापन सं. (तत्.) सेवा करने की क्रिया, ढंग या भाव, किसी पूज्य, आदरणीय व्यक्ति की परिचर्या, सेवा-टहल करने का भाव, रोगी की शुश्रूषा, परिचर्या का भाव।